Conclusion
उपसंहार

१ १९५० से पूर्व गुजरात में अजराड़ा घराने का तबला था ही नहीं। वह गुरुजी के आने के बाद ही हुआ। ऐसा देखा जाय तो बड़ौदा नरेश के राज्य में "कलावंत कारखाना" नामक एक अलायदा खाता चलता था। काफी दिग्गज कलाकार अपनि प्रस्तुती कर के वापिस चले गये इनमें कई तबला वादक आ कर चले गये एक पर भी कलाकार यहाँ पर स्थायीं नही हुआ।

२ शैक्षणिक दृष्टिसे तबले की शिक्षा और उसका विकास गुजरात में विकसित हुआ ही नहीं था। किन्तु गायन शाला में तबले की शिक्षा दी जाती थी परंतु वह शास्त्रोक्त तबला वादन के प्रकार से नही दी जाती थी।

३ एक बात निश्चित है कि प्रो.सुधीरकुमार सक्सेनाजी कॉलेज में नहीं आते तो आज तबला विभाग का काम आगे नहीं चलता।

४ प्रो.सुधीरकुमार सक्सेनाजी ने सिर्फ शिक्षा देने का काम नहीं किया किंतु पूरे गुजरात में अनेक संम्मेलनो में अप्रतिम तबला बजाकर संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने वाले वे प्रथम तबला वादक भी बने।

५ अजराड़ा घराने की शिष्य परंपरा चलाने वाले प्रथम गुरु एवं सिर्फ बड़ौदा में हीं नही परंतु गुजरात के शहरो एवं छोटे कस्बों में से
असंख्य विद्यार्थी गण आप के यहाँ तालीम लेने घर आते थे। इस प्रकार पूरे गुजरात में अजराड़ा घराने का तबला प्रसिद्ध हो गया।

६ प्रो. सुधीरकुमारजी ने खुद की बनायी हुई रचनाऐं जो सौंदर्य शास्त्र की दृष्टि से बेजोड़ रचनाऐं है । जो विद्यार्थीओं को सिखायी साथसाथ घरानेदार चीजें भी सिखायीं ।

७ सुधीरजी का मन इतना विशाल था कि विद्यार्थीओं को सिर्फ अपने घराने का ही तबला नहीं सिखाया अपितु अन्य घराने की भी तालीम दी जिससे हरेक विद्यार्थी सही मायने में एक कलाकार बन सके।

८ अजराड़ा घराने का तबला वादन सिर्फ त्रिताल में ही होता है ऐसा कहा जाता था इस लिये गुरुजी ने अन्य तालों में भी अनेक रचनाऐं बनायी जो सही मायने में बेजोड़ है।

९ प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी एक ऐसे आदर्श गुरु थे उनकी लिखी गयी पुस्तक भारत सरकार द्वारा २००७ में प्रकाशित की तब आपकी उम्र ८१ साल की थी।

१० प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी गुजरात के अकेले संपूर्ण तबला वादक थे जिन्होंने संगीत,वाद्य,नृत्य के साथ संगत करने वाले, एक वादक गुरु, जिनका नाम संगीत क्षेत्र में अमर हो गया यह गुजरात सौभाग्य रहा जायेगा।

११ संगीत क्षेत्र में ऐसे कम गुरु होंगे, कि उनके जीतेजी उनके नाम का गोल्ड मेडल उनके शिष्यों द्वारा महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी संचालित फॅकल्टी ऑफ परफॉरमींग आटर्स् को समर्पित किया हो।

१२ वडोदरा महानगर पालिका द्वारा उनका स्वर्गवास होने के बाद एक पथ का नामकरण प्रो सुधीरुमार सक्सेना के नाम किया गया।

१३ प्रो.सुधीरजी ने अपने गुरु से भले ही कष्ट पा कर तालीम हासिल की, किन्तु उतनी ही आसानीसे वैसा ही तबला अपने शिष्यों को सिखाया वह भी प्रेम पूर्वकबिना किसी भेदभाव के।

१४ तबला वादन के साथसाथ रागदारी का भी ज्ञान था। कई ऑरकेस्ट्रा तंतु वाद्य का आविष्कार किया साथोसाथ ताल वाद्य कचहरीका अधिकतर प्रयोग आप ही से हुआ।

१५ एक तबला वादक कर रुप में केवल तबले का ज्ञान न रखते हुए याने क्रियात्मक पक्ष के हर बंदिशो को साहित्य और सौंदर्य दोनों को जोड़ कर आपने महत्व पूर्ण काम किया।

१६ प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी पर शोध ग्रंथ लिखने के बाद यह अनुभव हुआ कि उनका योगदान केवल गुजरात में नहीं किंतु राष्ट्रिय
एवं आंतर राष्ट्रिय स्तर पर महत्व पूर्ण रहा है। ऐसे मुर्धन्य कलाकार पर ही शोध प्रबंध तो क्या और भी अधिक लिखा जा सकता है।

વડોદરા મહાનગરપાલિકા સેવાસદન દ્વારા તા. ૧૮-૧૦-૨૦૦૮ ના રોજ
માર્ગનું નામાભિધાન કરાયું તે તખ્તીઓ.

प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी

अजराड़ा घराना (वंशपरंपरा)

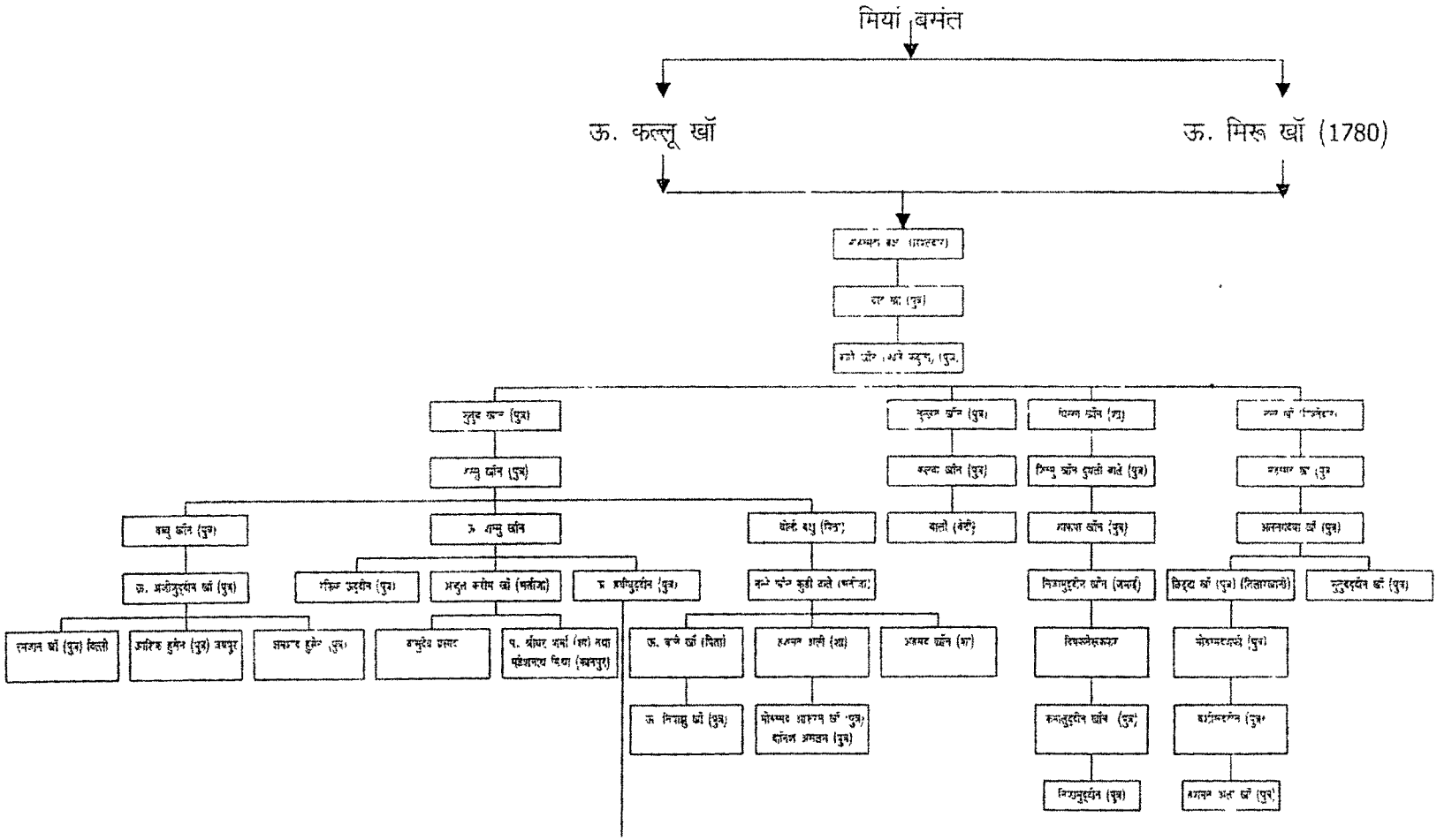

मंजू खॉं (पुत्र)	प्रो. सुधीर कुमार सक्सेना	हजारीलाल	मनमोहन सिंह	यशवंत केरकर	महाराज बॅनर्जी	गोवर्धन मालविया	पप्पन खॉं	करनसिंग	बटुक खॉंन
दिल्ली	(बडौदा) (शा)	कत्थक (शा)	दिल्ली(चचेरे भाई)	(मंबई) (शा)	इलाहाबाद (शा)	(शा)	(शा)	(शा)	(शा)

रामप्रवेशसिंग (शा) राम धुखे (शा) सुंदरलाल गांगाणी (शा) मदन लाल गागाणी (शा)

मधुकर गुरव	जी बी.	रविन्द्र निकते	इदरदत्त पॉल	चटटुबावु	पुष्करराज श्रीधर	रमेश वापोदरा	उमेश मेहत्ता	दिव्यांग वकील
(बड़ौदा)(शा)	(बड़ौदा)(शा)	(बड़ोदा)(शा)	(मोरेशियस)(शा)	(मोरेशियस)	(बडौदा)(शा)	अहमदाबाद(शा)	अहमदाबाद(शा)	अहमदाबाद(शा)

गौरांगभावसार	श्रीकांत फाटक (शा)
राजकोट (शा)	

अजय अष्टपुत्रे	देवेन्द्र दवे	सुधीर मईणकर	पी. पी. भोरवानी	अनिल गाधी	चंद्रशेखर पेंडसे	चंद्रकांत भोसले	रमेश भट्ट	कालूराम भवरिया
(बड़ौदा)(शा)	राजकोट(शा)	(मुबई)(शा)	मुंबई (शा)	(बड़ौदा)(शा)	(बड़ौदा)(शा)	(बडौदा)(शा)	(वड़ौदा)(शा)	(बड़ादा) शा

भास्कर पेंडसे	केदार मुकादम	चिन्मय मोले	राजेन्द्र जोशी	आशुतोष देव	स्वरूपहुसैन	मयाग देशमुख	विवेक व्यास	दक्षेस पटेल	
शोधार्थी	देवदत्त फलनीकर	नदकिशोर दाते			बंगलादेश	पुणे	भुज	वडोदरा	

सौजन्य : प्रो सुधीर कुमार सकसेना,

डा प्रो अजय अष्टपुत्रे